बुवाई करते समय जैव उर्वरकों का प्रयोग करें अधिक लाभ होगा

▸ कृषि वैज्ञानिक ने जैव उर्वरक पर किसानों को अहम जानकारी दी

बीटीएएन

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय कानपुर के अधीन संचालित अनौगी स्थिति कृषि विज्ञान केंद्र के मृदा वैज्ञानिक डॉ खलील खान ने जलालाबाद विकास खंड के डिगसरा ग्राम में फसलों में जैव उर्वरकों का प्रयोग विषय पर कृषक गोष्ठी का आयोजन किया। इस अवसर पर डॉ. खान ने बताया कि जैव उर्वरकों का प्रयोग करना फसलों के लिए पोषक तत्व उपलब्ध कराने का एक अच्छा स्रोत है। उन्होंने कहा कि जैव उर्वरक मूलतः जीवाणुओं का संग्रह है ।जो पौधों के लिए पोषक तत्व उपलब्ध कराते हैं। उन्होंने कहा कि जैव उर्वरक प्रयोग करने से मृदा एवं जल दूषित नहीं होते हैं। क्योंकि यह मृदा के ऊपरी हिस्से में रहकर अपना जीवन यापन करते हैं। इसके साथ ही उन्होंने यह भी कहा कि जैव उर्वरकों को एक बार उपयोग में लाने से यह कई वर्षों तक मृदा में बने रहते हैं ।तथा पौधों को पोषक तत्व उपलब्ध कराते रहते हैं ।जिसके कारण फसलों की उत्पादकता में दुष्प्रभाव नहीं पड़ता है ।अपितु उत्पादकता में वृद्धि होती है। उन्होंने कहा कि जैव उर्वरक फसलों को पोषक तत्व उपलब्ध कराने के साथ-साथ कई मृदा जनित बीमारियों की रोकथाम में भी सहायक हैं।

जैव उर्वरकों से बीज मृदा एवं जड़ शोधन

डॉक्टर खान ने बताया की जैव उर्वरकों में एजोटोबेक्टर एक वायुजीवी जीवाणु है जो वायुमंडलीय नाइट्रोजन को संग्रहित करने में सक्षम है ।यह जीवाणु उन मृदा में प्रभावी ढंग से कार्य करते हैं जिन मृदा में जैविक पदार्थ पर्याप्त मात्रा में होता है ।उन्होंने बताया कि एजोटोबेक्टर अदलहनी फसलें जैसे गेहूं, सरसों, एवं सब्जियों में प्रयोग किया जाता है। एजोटोबेक्टर औसतन प्रति हेक्टेयर 15 से 35 किलोग्राम नाइट्रोजन मिट्टी में संचय कर देता है। उन्होंने यह भी बताया कि इसी प्रकार राइजोबियम जीवाणु को दलहनी फसलों जैसे चना, मटर,मसूर आदि में प्रयोग किया जाता है जो 50 से 100 किलोग्राम नत्रजन संचय कर देता है। केंद्र के मौसम वैज्ञानिक डॉ. अमरेंद्र यादव ने बताया कि पीएसवी जीवाणु जो मृदा में स्थिर एवं अघुलनशील फास्फोरस को घुलनशील बनाने का कार्य करता है। डॉक्टर यादव ने बताया कि 30 से 50 किलोग्राम फास्फोरस प्रति हेक्टेयर पौधों को उपलब्ध हो जाता है। इसके साथ ही उन्होंने बताया कि फास्फोरस की उपलब्धता में 10 से 15 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की वृद्धि हो जाती है। डॉक्टर अमरेंद्र यादव ने बताया कि जैव उर्वरकों से बीज मृदा एवं जड़ शोधन किया जाता है। बीज उपचार हेतु उन्होंने बताया कि 200 ग्राम का जैव उर्वरक 10 किलोग्राम बीज के लिए पर्याप्त होता है। इसको आधा लीटर पानी में 100 ग्राम गुड या चीनी का शीरा बनाकर उसे ठंडा होने पर जैव उर्वरक मिला देते हैं। तत्पश्चात बीजों को शोधित करते हैं तथा छाया में सुखा लेते हैं इसके बाद बीजों की बुवाई कर देते हैं । इसी प्रकार जड़ उपचार के लिए बताया कि 20 पैकेट जैव उर्वरक को 20 से 25 लीटर पानी में घोलकर एक हेक्टेयर की जड़ों हेतु 30 मिनट तक जड़ों को डुबोकर उपचारित करते हैं। मृदा उपचार के लिए डॉक्टर मिश्रा ने बताया कि 5 किलोग्राम जैव उर्वरक को 50 किलोग्राम गोबर में मिलाकर 24 घंटे रखने के बाद एक हेक्टेयर खेत में समान मात्रा में बिखर देते हैं ।उन्होंने कहा कि जैव उर्वरक प्रयोग से सभी फसलों को लाभ होता है। जिससे कि फसल उत्पादन लागत में कमी आती है। और किसान की आय में वृद्धि होती है। इस अवसर पर केंद्र के अमित प्रताप सिंह एवं प्रगति शील किसान राहुल पचपुखरा, भगवानदीन,राम निहोर, राम कुमार,एवं राम आसरे सहित अन्य किसान उपस्थित रहे।

Sign in to edit and save changes to this file.

दैनिक भास्कर

प्रशिक्षण कार्यक्रम का हुआ समापन

कानपुर। सीएसए के प्रसार निदेशालय में कृषि विस्तार दृष्टिकोण एवं क्रिया विधि तथा कटाई उपरांत तकनीक विषय पर आयोजित क्षमता विकास प्रशिक्षण के दूसरे दिन डॉक्टर पी एन कटियार पूर्व प्राध्यापक उद्यान ने फल, सब्जी,प्रसंस्करण एवं विपणन तकनीकी विषय पर चर्चा करते हुए बताया कि इस को अपनाकर कृषक अधिकाधिक लाभ अर्जित कर सकते हैं। वहीं डॉ. सीमा सोनकर सह प्राध्यापक गृह विज्ञान ने पोषकीय फसलों, फल एवं सब्जी के बारे में विस्तृत चर्चा करते हुए बताया की इनके प्रयोग से मानव स्वास्थ्य को बेहतर किया जा सकता है। डॉ. एस बी पाल प्रसार वैज्ञानिक ने प्रचार प्रसार के प्रभावी माध्यम किसान मेला, प्रक्षेत्र दिवस एवं प्रशिक्षण की उपयोगिता एवं महत्व पर वार्ता देते हुए कहा कि इनका सफल आयोजन कर कृषि की नवीनतम तकनीक कृषकों तक सरलता से पहुंचाई जा सकती है।

राष्ट्रीय सहारा

कानपुर • शनिवार • 1 जनवरी • 2022

कृषि वैज्ञानिकों ने किया कृषकों की आर्थिक मजबूती पर मंथन

सीएसए में दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का समापन। फोटो : एसएनवी

कानपुर (एसएनवी)। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के प्रसार निदेशालय में कृषि विस्तार दृष्टिकोण एवं क्रिया विधि तथा कटाई उपरांत तकनीक विषय पर आयोजित क्षमता विकास प्रशिक्षण के दूसरे दिन कृषकों को तकनीकी रूप से मजबूत कर उनकी आर्थिक स्थिति मजबूत करने पर चर्चा की गयी। वक्ताओं ने कहा कि फल-सब्जी प्रसंस्करण एवं विपणन तकनीक को अपनाकर कृषक अधिकाधिक लाभ अर्जित कर सकते हैं।

सीएसए में दो दिनी प्रशिक्षण शिविर का समापन

उद्यान व विपणन तकनीक विभाग के पूर्व प्राध्यापक डॉ. पीएन कटियार ने फल-सब्जी प्रसंस्करण एवं विपणन तकनीक पर चर्चा करते हुए कहा कृषकों को इसे तत्काल अपनाना चाहिये। इसके उनका काफी फायदा होगा। डॉ. सीमा सोनकर सह प्राध्यापक गृह विज्ञान ने पोषकीय फसलों, फल एवं सब्जी के बारे में विस्तृत चर्चा करते हुए बताया कि इनके प्रयोग से मानव स्वास्थ्य को बेहतर किया जा सकता है। डॉ. एसबी पाल प्रसार वैज्ञानिक ने प्रचार प्रसार के प्रभावी माध्यम किसान मेला, प्रक्षेत्र दिवस एवं प्रशिक्षण की उपयोगिता एवं महत्व पर वार्ता करते हुए कहा कि इनका सफल आयोजन कर कृषि की नवीनतम तकनीक कृषकों तक सरलता से पहुंचाई जा सकती है, जिससे कृषक एवं कृषक महिलाओं को तकनीकी लाभ मिलेगा।

प्रशिक्षण कार्यक्रम के समापन अवसर पर डॉ. धनंजय सिंह प्राध्यापक एवं अध्यक्ष कृषि विज्ञान केंद्र इटावा एवं डॉ. पीके राठी सह निदेशक प्रसार ने प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र वितरित किए। मुख्य अतिथि ने अपने संबोधन में कहा कि आप सभी कृषि की नवीनतम तकनीकों को उचित प्रचार प्रसार माध्यमों द्वारा अपने-अपने जनपद में प्रत्येक कृषक तक पहुंचाने का प्रयास करें। यदि ऐसा हुआ तो प्रदेश एवं देश में कृषि एवं पशुपालन की उत्पादन एवं उत्पादकता में आशातीत वृद्धि होगी, जिससे कृषकों की आर्थिक स्थिति में बहुत बड़ा सुधार हो सकेगा। इस अवसर पर डॉ. सुभाष चंद्रा, डॉ. सोहन लाल वर्मा, डॉ. जितेंद्र सिंह यादव और अन्य लोग उपस्थित रहे।

www.facebook.com/worldkhabarexpress www.twitter.com/worldkhabarexpress www.youtube.com/worldkhabarex

WORLD खबर EXPRESS

शुक्रवार, 31-12-2021 अंक-447

www.worldkhabarexpress.media

www.worldkhabarexpress.com

WORLD खबर एक्सप्रेस

MID DAY E-PAPER

कृषि विज्ञान केंद्र में आयोजित दो दिवसीय कार्यक्रम का समापन

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के प्रसार निदेशालय में कृषि विस्तार दृष्टिकोण एवं क्रिया विधि तथा कटाई उपरांत तकनीक विषय पर आयोजित क्षमता विकास प्रशिक्षण के दूसरे दिन डॉक्टर पी एन कटियार पूर्व प्राध्यापक उद्यान ने फल, सब्जी,प्रसंस्करण एवं विपणन तकनीकी विषय पर चर्चा करते हुए बताया कि इस को अपनाकर कृषक अधिकाधिक लाभ अर्जित कर सकते हैं। वहीं डॉ सीमा सोनकर सह प्राध्यापक गृह विज्ञान ने पोषकीय फसलों, फल एवं सब्जी के बारे में विस्तृत चर्चा करते हुए बताया की इनके प्रयोग से मानव स्वास्थ्य को बेहतर किया जा सकता है। डॉ एस बी पाल प्रसार वैज्ञानिक ने प्रचार प्रसार के प्रभावी माध्यम किसान मेला,प्रक्षेत्र दिवस एवं प्रशिक्षण की उपयोगिता एवं महत्व पर वार्ता देते हुए कहा कि इनका सफल आयोजन कर कृषि की नवीनतम तकनीक कृषकों तक सरलता से पहुंचाई जा सकती है। जिससे कृषक एवं कृषक महिलाओं को तकनीकी लाभ मिलेगा। प्रशिक्षण कार्यक्रम के समापन अवसर पर डॉ धनंजय सिंह प्राध्यापक एवं अध्यक्ष कृषि विज्ञान केंद्र इटावा एवं डॉ पी के राठी सह निदेशक प्रसार ने प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र वितरित किए। मुख्य अतिथि ने अपने संबोधन में कहा कि आप सभी कृषि की नवीनतम तकनीकों को उचित प्रचार प्रसार माध्यमों द्वारा अपने-अपने जनपद में प्रत्येक कृषक तक पहुंचाने का प्रयास करें। यदि ऐसा हुआ तो प्रदेश एवं देश में कृषि एवं पशुपालन की उत्पादन एवं उत्पादकता में आशातीत वृद्धि होगी। जिससे कृषकों की आर्थिक स्थिति में बहुत बड़ा सुधार हो सकेगा। इस अवसर पर डॉ सुभाष चंद्रा, डॉ सोहन लाल वर्मा एवं डॉ जितेंद्र सिंह यादव सहित अन्य लोग उपस्थित रहे।